विज्ञान मित्र क्लब

(मध्यप्रदेश में, विद्यार्थियों को वैज्ञानिक अभिरूचि की ओर मुखर करने हेतु एक मंच)

मध्यप्रदेश की शालाओं में, विज्ञान विषय सिर्फ पढ़ने की नही, वरन् करके सीखने की दिशा में अग्रसर है। बच्चे पढें, तो कक्षा की परीक्षा में पास हो जायेंगे, पर बच्चे सीखें तो उनकी अवधारणाएं स्पष्ट हो जायेगी। इसी सोच के साथ मध्यप्रदेश की शालाओं में, विज्ञान जैसे जटिल विषय की समझ विकसित करने के लिये स्थापित किये गये हैं, विज्ञान मित्र क्लब।

राज्य शिक्षा केन्द्र के द्वारा सत्र 2018-19 में प्रदेश की समस्त माध्यमिक शालाओं में कक्षा 6 से 8 के विद्यार्थियों के लिए ''विज्ञान मित्र क्लब'' स्थापित किये गए हैं। जिसमें विद्यार्थी वैज्ञानिक ढंग से, विज्ञान की विभिन्न अवधारणाओं को, समझते हैं। उनके कार्यो को 9 विषय बिंदुओं में पिरोया गया है। इन कार्यो की रिर्पोटिंग ''अन्वेषिका'' नामक पुस्तिका में दर्ज की जाती है। यह पुस्तिका प्रत्येक माध्यमिक विद्यालय को प्रदान की जाती है।

विभिन्न गतिविधियों को कुछ बिंदुओं में इस प्रकार समेकित किया गया है -

(1) तोड-फोड़-जोड़ से सीखना -
पुरानी और कबाड़ की चीजो का उपयोग
करके मशीने, मॉडल्स तैयार करना।
काष्ठ, मिटटी, रेत के प्रयोग से
कलात्मक सामग्री बनाना।
उदा.- शा.मा.शा. धामनिया, जिला रतलाम

जे.सी. बी मशीन

(2) अंधविश्वास, कुरीतियों से प्रमाणिक ज्ञान की ओर जाना -
सामाजिक परिवेश में बीमारियों
के निदान के लिए ओझा, टोटका-टोना
से बचाव हेतु नुक्कड नाटक, रैली, रोलप्ले करना।
उदा. - शा.मा.शा. फतेहगढ़, जिला सिहोर

(3) परिवेशीय स्वच्छता एवं प्रकृति प्रेम के लिए जागरूक करना -
पोलीथिन मुक्त जीवन, नदियों का संरक्षण
शौचालय का प्रयोग आदि के लिए प्रयास करना।
उदा. - शा.मा.शा. बुर्जुग जिला खरगौन
पशुपक्षियों के व्यवहार के अध्ययन के लिए 'पक्षी दर्शन' को
प्रोत्साहित करना।
उदा. - कल्याणपुर शाला राहतगढ़, जिला सागर

(4) नैसर्गिक ऊर्जा का संरक्षण करना -

सोलर ऊर्जा के संरक्षण हेतु संसाधनों की जानकारी प्राप्त करना।

पवन ऊर्जा से बिजली उत्पादन को जानना।

उदा. - शा.मा. शाला कान्हर गॉव, जिला नरसिंहपुर

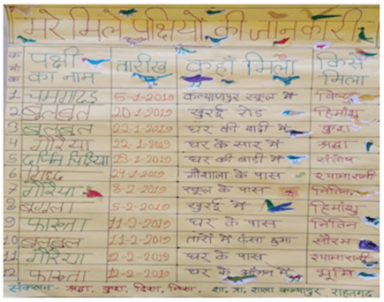

(5) प्रयोग करके देखना/सीखना -

अपने आस-पास के घटते-बढ़ते तापमान को मापना और उसके कारणों का पता लगाना।

फसलों की नई प्रजातियों/बीजों को जानना और उनके बुवाई करने की परिस्तिथियॉ का पता लगाकर जानकारियो को कृषकों तक पहुॅचाना।

(6) भ्रमण करके देखना, जानना -

मिटटी परीक्षण तथा जल परीक्षण करके प्रयोगशालाओं में मिटटी एवं जल के तत्वों की पहचान करना।

कारखानों के भ्रमण से व्यावसायिक ज्ञान को प्राप्त करना।

उदा. - शा.मा. शाला शालिपुर, जिला दमोह

उपरोक्तानुसार कुछ उदाहरण स्वमेव स्पष्ट करते हैं, इस क्लब की गतिविधियों को और बाल प्रतिभाओं के कार्यो को। इन गतिविधियों को करने में विद्यार्थियों का उत्साह अपने चरम् पर होता है। अनेक विद्यालयों में विद्यार्थियों के द्वारा कुछ नवीन प्रयोग, कुछ नई-नई गतिविधियों के माध्यम से अपनी वैज्ञानिक सोच और कल्पनाओं को मूर्त रुप दिया है।

यह बच्चे, राष्ट्रीय विज्ञान कांग्रेस, राज्य विज्ञान मेला आदि प्रतिस्पर्धाओं में भी सहभागिता कर, अपनी मेघा के बल पर विजेता भी बनें हैं। विज्ञान मित्र क्लब तो एक शुरुआत है, विज्ञान से मित्रता की, आगे इसके सकारात्मक परिणाम प्राप्त होने की संभावनाएँ तो है ही, साथ ही विश्वास भी है।